ज़िंदा या मुर्दा

(2:1–7)

1974 में एक निर्भीक स्टंटमैन इवेल नेवेल ने हज़ारों लोगों के सामने दावा किया कि वह इडाहो की स्नेक रिवर घाटी को रॉकेट लगे मोटरसाइकिल पर सवार होकर एक छलांग में पार कर सकता है। लगभग 20 हज़ार लोगों ने इस स्टंट को निकट से देखने के लिए पैसे दिए। 10,00,000 से अधिक लोगों ने पूरे देश के सिनेमा घरों में इसे बड़े पर्दे पर देखने के लिए टिकट खरीदे।

नेवेल से छलांग लगाकर वह घाटी पार नहीं हुई। उसके ''उड़न साइकिल'' पर लगा पैराशूट छलांग लगाने से कुछ पहले ही खुल गया। उसका साइकिल और वह वह दु:साहसी भूमि पर तैरने लगे।

परन्तु नेवेल घाटी के इतनी दूर चला गया कि यदि हम इतनी तेज़ गति से गाड़ी चलाकर घाटी को पार करने की कोशिश करें तो नहीं कर सकते। कुछ कारें मेरी कार से अधिक दूर जा सकती होंगी, परन्तु इतनी सफलता से कोई कार कूद नहीं सकती। वे टूट जाएंगी।

जीवन की बात करें तो लोगों का जीवन अलग-अलग तरह का होता है। यदि हम एक-एक आदमी की तुलना करें, तो हो सकता है कि एक व्यक्ति में दूसरे व्यक्ति से अधिक भलाई मिले। परन्तु पवित्र परमेश्वर द्वारा तुलना करने पर सब लोग भलाई से रहित हैं। कोई व्यक्ति पापी मनुष्य को पवित्र परमेश्वर से अलग करने वाली घाटी को कूदकर पार नहीं कर सकता।

संसार के सबसे नि:स्वार्थ, निष्काम, दानी व्यक्ति को एडोल्फ हिटलर या चार्ल्स मैंसन की तरह ही उद्धार की सामर्थ की आवश्यकता है। तुलना करें तो, उसका जीवन इन लोगों की तरह पाप से भरा हुआ नहीं होगा, परन्तु वह भी परमेश्वर से दूर और पाप में मरा हुआ है।

कोई भी पापी किसी दूसरे पापी से आत्मिक रूप में अधिक अच्छा नहीं है। उद्धार करने वाली परमेश्वर की सामर्थ से अलग रहकर, हम में से कोई परमेश्वर से उतनी ही दूर है जितना कोई शराबी, नशेड़ी, या गन्दी फिल्में बनाने वाला। पापों में मरे होने का अर्थ कम या अधिक नहीं बल्कि एक जैसा ही है।

अच्छी बात यह है कि परमेश्वर की सामर्थ आपके लिए वही कर सकती है जो उसने मसीह के लिए किया। परमेश्वर की सामर्थ मुर्दे को जिलाती है। इफिसियों 2:1–7 इस सच्चाई की पुष्टि करती है: *परमेश्वर मसीह के द्वारा पापियों को मृत्यु से जीवन में लाकर अपनी सामर्थ दिखाता है।*

परमेश्वर अपने से दूर रहने वाले पापियों की स्थिति का वर्णन करता है

पौलुस ने इफिसुस के मसीही लोगों को बताया:

> और उस ने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे। जिस में तुम पहिले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न मानने वालों के लिए कार्य करता है। इनमें हम भी सब के सब पहिले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर, और मन की मनसाएं पूरी करते थे, और और लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे (इफिसियों 2:1-3)।

पौलुस ने मसीह से पहले व्यक्ति की भद्दी तस्वीर में रंग भरा। इन आयतों में उस स्थिति को इतने भयानक ढंग से दिखाया गया है कि केवल परमेश्वर की सामर्थ ही उस पर काबू पा सकती है। इस संदर्भ में कम से कम पांच दावे मिलते हैं।

1. *हम मरे हुए थे* (आयत 1)। इस वाक्य में हमारी पहले की स्थिति का सार है। हम न केवल मर रहे थे, बल्कि बुरी तरह से जख़्मी और बीमार भी थे। हम परमेश्वर के लिए मरे हुए थे। हमारी आत्माओं में जीवन नहीं था। दुख की बात है कि एक खोए हुए व्यक्ति को इस बात का अहसास नहीं होता कि वह वास्तव में कितना मरा हुआ है। मेरा मित्र बॉब तीस साल का होगा, जब वह मसीही बना था। एक बार उसने मुझे बताया, ''एक समय था जब मुझे अपने आप में कोई कमी नहीं लगती थी। मुझे जीवन में बिल्कुल खालीपन नहीं लगता था।'' हम में से बहुत से लोग अपनी तुलना बॉब से कर सकते हैं। ऐसे दिन, महीने और वर्ष हम में से कइयों के जीवन में आए होंगे, जब हम अपनी इच्छा के अनुसार जीवन बिताते हुए, जीवन की ''तेज़ लेन'' में चल रहे थे। उस समय हमें ध्यान भी न था कि हम अन्दर से कितनी बुरी तरह से मरे हुए हैं।

2. *हम संसार की रीति पर चलते थे* (आयत 2)। यूनानी भाषा के नये नियम में ''संसार'' शब्द 186 बार आया है, और हर बार इसका सम्बन्ध बुराई से ही है। ''जगत'' उस सृष्टि को कहा गया है जो पूरी तरह से परमेश्वर की इच्छा से बाहर है। यह वह सांसारिक दृष्टिकोण है जो परमेश्वर को गंभीरता से लेने से इन्कार करता है। यह सैकुलर दृष्टिकोण आज हमारे समाज में पाया जाता है। यह तात्कालिक कृतज्ञता को बढ़ावा देता है। इन लोगों के लिए जीवन में सबसे महत्वपूर्ण बात काम-वासना, खाना-पीना, घूमना, कपड़े, धन और आनन्द मनाना है। सांसारिक विचार प्रसिद्ध पुस्तकों के पिछले पन्नों पर छाया रहता है। यह अपने आप को आधुनिक कला, टीवी कार्यक्रमों तथा लोगों को पसन्द आने वाली फिल्मों में दिखाता है। सांसारिक दृष्टिकोण नैतिकता को किसी न किसी बात से जोड़ देता है। सही और गलत को निजी प्राथमिकता के लिए रास्ता मिल जाता है।

3. *हम पर दुष्ट शक्तियों का नियन्त्रण था।* आयत 2 कहती है कि हम केवल संसार की रीति पर ही नहीं बल्कि ''आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात उस आत्मा के

अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में कार्य करता है।'' शैतान ''इस जगत का सरदार'' (यूहन्ना 12:31), ''दुष्टात्माओं का सरदार'' (मज़ी 9:34), और ''इस संसार का ईश्वर'' है जिसने ''अविश्वासियों की बुद्धि को ... अंधी कर'' दिया है (2 कुरिन्थियों 4:4)। शैतान परमेश्वर का ही विरोध करता है। मसीह से पहले, हम जाने अनजाने में शैतान की गिरज़्त में थे। हम भी शैतान के दण्ड के भागी थे। हमारे मनों में उसका सीधा और प्रत्यक्ष प्रभाव था।

4. *हम शरीर की अभिलाषाओं में दिन बिताते थे* (आयत 3क)। ''शरीर'' शज़्द यूनानी भाषा के शज़्द *sarx* का अनुवाद है। यह मनुष्यजाति के पाप में आने की ओर ध्यान दिलाता है। बिना पछताए अर्थात परमेश्वर का विरोध करते हुए हमारा ऐसा ही व्यवहार था।

5. *हम क्रोध की संतान थे* (आयत 3ख)। पौलुस ने कहा कि हम ''और लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की संतान थे।'' परमेश्वर की पवित्रता पाप के विरुद्ध क्रोध की मांग करती है। जब भी, जहां भी और जिस किसी के द्वारा भी यह दिखाई जाती है, परमेश्वर के लिए यह घृणित है। यूनानी भाषा के लिए ''क्रोध'' (यू.: *orge*) शज़्द का अर्थ है ''पवित्र परमेश्वर की हर प्रकार की बुराई के विरुद्ध कठोर और निरन्तर प्रतिक्रिया।''

पौलुस ने मसीह के बिना जीवन का स्पष्ट चित्रण किया है। हम मरे हुए थे। हम संसार की रीति पर चलते थे। दुष्ट शज़्तियों का हम पर नियन्त्रण था। हम शरीर की अभिलाषा के अनुसार जीवन बिता रहे थे। परमेश्वर के सामने दोषी थे।

कोई कह सकता है, ''पर, निष्कलंक जीवन जीने वाले लोगों के बारे में आप ज़्या कहते हैं ? वे अपराधी नहीं हैं। वे अच्छे पड़ोसी हैं। उन्होंने जीवन में कोई बुराई नहीं की है। यह बात उन पर कैसे लागू हो सकती है ?'' इसे समझाने के लिए मुझे जॉन मैकार्थर की व्याज़्या अच्छी लगती है:

> परमेश्वर से अलग होने वाले सब लोगों के पापी होने का अर्थ यह नहीं है कि हर कोई उतना ही भ्रष्ट और बुरा है। युद्ध के किसी मैदान में बीस लाशों की दशा अलग-अलग हो सकती है, परन्तु एक बात तो पज़्की है कि वे सब मरे हुए हैं। मृत्यु अपने आप को कई रूपों और डिग्रियों में दिखाती है, परन्तु मृत्यु की अपने आप में कोई डिग्री नहीं है। पाप अपने आप को कई रूपों व डिग्रियों में दिखाता है, परन्तु पाप की स्थिति की अपने आप में कोई डिग्री नहीं है। आवश्यक नहीं कि सब लोग एक जैसे बुरे हों, परन्तु परमेश्वर के मापदण्ड तक पहुंचने में सभी नाकाम हैं।[1]

इस सच्चाई के दो व्यावहारिक विचारों पर ध्यान देते हैं।

पहला, उद्धार के लिए आवश्यकता की जागरूकता का सीधा सज़्बन्ध आपकी इस समझ से है कि खोए होने का ज़्या अर्थ है। परमेश्वर की सामर्थ के बिना आपको कोई आशा नहीं है, और परमेश्वर की सामर्थ केवल मसीह के सुसमाचार में ही दिखती है। यदि आपके पास मसीह नहीं है, तो आपके जीवन के लिए परमेश्वर की व्याज़्या 2:1-3 में

मिलती है। आपको लग सकता है कि आप जीवित हैं, परन्तु परमेश्वर के लिए आप मरे हुए हैं। आप में से कई लोग जवान हैं और आपको लगता है कि परमेश्वर की आवश्यकता आपको अभी नहीं बल्कि बुढ़ापे में ही पड़ेगी। आप में से कुछ लोग अपने काम में इतने व्यस्त हैं कि उनके पास क्षण भर के लिए परमेश्वर के बारे में सोचने का समय नहीं है। आप में से कई लोगों की उम्र इतनी हो चुकी है कि उन्हें परमेश्वर के बिना रहने की आदत हो गई है। बाइबल में देखिए। इसके वचन को देखें। यह एक दर्पण है। यह दिखाता है कि आप परमेश्वर रहित हैं, ताकि आपको पता चल सके कि आपको उसकी कितनी आवश्यकता है।

दूसरा, परमेश्वर की महिमा की आवश्यकता का सीधा सज़्बन्ध हमारी इस समझ से है कि हम उसके बिना ज़्या थे। यदि आपको आराधना करना बोरिंग लगता है तो आपको इस बात की बिल्कुल समझ नहीं है कि परमेश्वर ने आपके लिए ज़्या किया है। हमें महिमा के गीत गाते हुए कभी उबासी नहीं लेनी चाहिए अर्थात आराधना का अवसर या प्रभु की स्तुति करनी नहीं छोड़नी चाहिए। हमें प्रभु के लिए उज़्जेजित, जोश से भरे और उत्साहित रहना चाहिए। यदि हमें यह समझ है कि किसी समय हम ज़्या थे और परमेश्वर हमारे जीवनों में ज़्या परिवर्तन लाया है तो हम ''हैलेलुय्याह अर्थात परमेश्वर की स्तुति हो'' लापरवाही से नहीं गा सकते। हम ''लहू जो कि क्रूस से जारी'' बिना जोश और आनन्द के कैसे गा सकते हैं? जितनी हमें समझ आती है कि परमेश्वर के बिना हम ज़्या थे उतना ही उस अन्तर के लिए जो हमारे जीवनों में आया है, हम उसकी स्तुति गाएंगे।

2:1-3 में उसके चित्रण से हमें परमेश्वर की सामर्थ से अलग रहने वाले पापियों की स्थिति का पता चलता है।

अपनी सामर्थ के कारण परमेश्वर पापियों में आने वाले परिवर्तन को प्रकट करता है

पापियों की स्थिति दिखाने के बाद, पौलुस ने समझाया कि परमेश्वर ने उस स्थिति पर परिवर्तन लाने के लिए ज़्या किया है:

> परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया। जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; (अनुग्रह ही से तुज़्हारा उद्धार हुआ है)। और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया। कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आने वाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए (2:4-7)।

सुसमाचार का आधार ''परन्तु परमेश्वर'' शज़्द हैं। इनसे हमें अपनी भयानक स्थिति का, अपनी असफलताओं तथा पापों का और अपने विद्रोह तथा खोए होने का स्मरण आता है। इनसे एक चौंकाने वाला अन्तर भी पता चलता है। हमारी आत्मिक असफलता की

पृष्ठभूमि के बावजूद ऐसा परमेश्वर भी है जो "अनुग्रह में धनी" है और जिसमें वह बड़ा प्रेम है, "जिससे उसने हम से प्रेम किया।"

इन क्रियाओं तथा कार्यों को देखकर ध्यान दें कि उसने हमारे लिए ज़्या किया है:

1. *उसने "हमें मसीह के साथ जिलाया।"* मसीही व्यज़्ति अब परमेश्वर से कटा हुआ नहीं रहा। अब वह मरा हुआ नहीं है। यीशु उसके लिए मार्ग, सत्य और जीवन है (यूहन्ना 14:6)। उसमें जीवन है (यूहन्ना 1:4)। जो कोई भी यीशु में अपना भरोसा दिखाता है वह नाश नहीं होगा बल्कि अनन्त जीवन पाएगा (यूहन्ना 3:16)।

2. *उसने "हमें मसीह यीशु में उसके साथ उठाया।"* कोई उठाया कब जाता है? पौलुस ने लिखा है:

> ज़्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का [में] बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का [में] बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का [में] बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। ज़्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे (रोमियों 6:3-5)।

जब आपको समझ आ जाती है कि आप खोए हुए हैं, आप यह सुनते हैं कि यीशु आपके पापों के लिए मरा, उसके वचन तथा उसकी प्रतिज्ञाओं में भरोसा करते हैं और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेते हैं, तभी मसीह के साथ आपको जिलाया जाता है। अब आप अपने पापों में मरे हुए नहीं रहे। आप मसीह में जीवित हैं।

3. *उसने "हमें स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बिठाया।"* हम मसीह के साथ स्वर्गीय स्थानों में होते हैं। अन्य शज़्दों में, हमें एक नया घर मिल गया है। संसार जो परमेश्वर से आगे कदम उठाता है, अब हमारा घर नहीं रहा। हम अब एक नये माहौल में रहते हैं। हम उस माहौल में रहते हैं जिसके लिए परमेश्वर ने हमें बनाया है। यीशु इसे सज़्भव बनाने के लिए ही संसार में आया। उसने इस नये घर या माहौल को "राज्य" कहा:

> "मेरा राज्य इस जगत का नहीं, ..."(यूहन्ना 18:36)।

> "...तुज़्हारे पिता को यह भाया है, कि तुज़्हें राज्य दे" (लूका 12:32)।

> "और जैसे मेरे पिता ने मेरे लिए एक राज्य ठहराया है, वैसे ही मैं भी तुज़्हारे लिए ठहराता हूं, ताकि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज पर खाओ-पियो; ..." (लूका 22:29, 30)।

> "यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता" (यूहन्ना 3:3)।

मसीही लोग मसीह के साथ स्वर्गीय स्थानों पर बैठे हैं।

पौलुस द्वारा चुनी गई क्रियाओं से यह पता चलता है कि परमेश्वर ने *ज़्या* किया। परमेश्वर ने ''हमें मसीह के साथ जिलाया,'' ''हमें मसीह यीशु में उसके साथ उठाया।'', ''हमें स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बिठाया।'' पौलुस ने आगे बताया कि परमेश्वर ने हमारे लिए यह सब *ज़्यों* किया है। उसने हमें ज़्यों जिलाया है जबकि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर होने के अधिकारी हैं।

उज़र हमारे उद्धार से भी आगे, हमारी स्वतन्त्रता से भी आगे, हमारे जिलाए जाने से भी आगे और परमेश्वर के साथ हमारी संगति से भी आगे और सबसे आगे चला जाता है। पौलुस ने कहा, ''वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आने वाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए'' (2:7)।

समझने की कोशिश करें कि यह आयत किस बात की पुष्टि करती है। परमेश्वर हमें मसीह में जीवन के लिए मृत्यु से बाहर लाया है ताकि हम में वह अपने अनुग्रह की पूरी सृष्टि और महानता को दिखा सके। यरूशलेम के प्रारज़्भिक मसीहियों से अलग करके, अन्ताकिया, इफिसुस, कुरिन्थुस और रोम के लोगों तक। यह दूसरी सदी के मसीही लोगों और उनसे आगे मसीह का नाम लेने वाले सब लोगों तक पहुंच गया। सदियां बीतने पर, परमेश्वर ने अपने प्रेम तथा अनुग्रह का निरन्तर प्रदर्शन पूरी सृष्टि में किया है। यदि आप मसीह के हैं, तो आप परमेश्वर के अनुग्रह की उस शानदार गवाही का भाग हैं।

अनन्त युगों के आने पर, हम उस सबके लिए, जो परमेश्वर ने मसीह में हमें जिलाकर किया है, हम चकित होते हुए परमेश्वर की महिमा करेंगे। वास्तव में, परमेश्वर की महिमा के लिए स्वर्गदूतों की सेना भी हमारे साथ सदा-सदा के लिए मिल जाएगी।

सारांश

इन तीन प्रश्नों के साथ पाठ को समाप्ति करते हैं। आप इनका उज़र अपने आप से पूछ सकते हैं। यदि आपके उज़र से आपको अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता लगती है तो यह परिवर्तन तुरन्त करें।

आप आत्मिक रूप में मरे हुए हैं या जीवित ? ज़्या आपका जीवन ऐसा है जो सचमुच आपको मृत्यु से जीवन में लाने के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता हो ? ज़्या दूसरों को आपके जीवन में देखकर पता चलता है कि परमेश्वर ने आप में कोई परिवर्तन किया है ?

आपने इन प्रश्नों का ज़्या उज़र दिया है ? आपको कौन सा परिवर्तन करना चाहिए ? परमेश्वर ने आपको अपने जीवन में परिवर्तन करने की सामर्थ दी है। उसे यह परिवर्तन करने दें।

टिप्पणी

[1]जॉन मैकार्थर जूनी., *इफिसियंस,* द मैकार्थर न्यू टैस्टामेंट कमैन्ट्री (शिकागो, इलिनोइसः मूडी प्रैस, 1986), 54.

शांति

बाइबल में पाई जाने वाली शांति वर्षा और आंधी में चट्टान की चोटी में बने घोंसले में बैठे नन्हें पक्षी की तरह, अशांति और तूफ़ान में भी चैन तथा सुख का आभास है। इफिसियों 2 में पौलुस ने तीन बार इसी शांति की बात की है। हमारी इस शांति का अनादि स्रोत प्रभु यीशु मसीह के सिवाय कोई और नहीं है: ''क्योंकि वही हमारा मेल [अर्थात शांति] है, ...'' (इफिसियों 2:14)।

मसीह के शांति या मेल कराने को व्यावहारिक रूप में उसकी कलीसिया में देखा जाता है। यहूदी तथा अन्यजाति लोग सदियों से एक दूसरे के प्रति घृणा रखते थे। यहूदियों को ढेर सारी मिठाई पाने वाले बच्चों की तरह आत्मिक विशेषाधिकार मिले थे और वे अन्यजातियों को ''कुत्तों'' की तरह मानते थे। इसी प्रकार अन्यजाति भी घमण्डी यहूदियों से घृणा करते थे। इन कभी न मिलने वाली मानवीय जातियों को शांति के राजकुमार ने एक कर दिया। उसका उद्देश्य ''दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल'' (इफिसियों 2:15) कराना था।

न केवल उसके स्वभाव से शांति का और शांति देने वाला होने का पता चलता था बल्कि मसीह ने शांति का संदेश भी दिया। जब उसका जन्म हुआ, तो स्वर्गदूतों ने गाया था, ''पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शांति हो'' (लूका 2:14)। अपना समय निकट आने पर मसीह ने कहा था, ''मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; ...'' (यूहन्ना 14:27)।

क्योंकि हमारे उद्धार का देने वाला अनन्तशांति देने वाला है, इसलिए कलीसिया को शांति बनाने का निर्देश मिलता है। इफिसियों 4:3 में पौलुस ने कलीसिया से ''मेल के बंध में आत्मा की एकता रखने का यत्न'' करने का आग्रह किया। मसीही लोग शांति रखने वाले लोग हैं। अंग्रेज़ी का ''irenic'' शब्द ''शांति'' के लिए *eirene* बिल्कुल उपयुक्त है। मसीही लोगों को आयरेनिक होना चाहिए, जो शांति रखने वाले और सब सम्बन्धों में शांति का लक्ष्य रखते हों।

लिविंग वर्ड्स इन इफिसियंस से लिया गया
वेयन डेज़लर